Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा- नौवीं
विषय- हिन्दी साहित्य शिक्षिका- श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक - साहित्य सागर

पाठ- 5. अपना- अपना भाग्य (कहानी) लेखक- जैनेंद्र कुमार

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य पुस्तक साहित्य सागर की पृष्ठ संख्या- 26 पर दिए पाठ- 5 'अपना - अपना भाग्य' नामक कहानी का अध्ययन करेंगे।

बच्चो ! 'अपना - अपना भाग्य' कहानी लेखक जैनेंद्र कुमार जी द्वारा रचित है। कहानी का कोई न कोई उद्देश्य अथवा संदेश होता है। बिना उद्देश्य के कहानी की रचना असंभव है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने समाज में व्याप्त गरीब व अमीर वर्ग के बीच के अंतर को भी दिखाने का प्रयास किया है। लेखक के अनुसार गरीबों से सब सहानुभूति तो व्यक्त करते हैं परन्तु उनकी सहायता नहीं करते। अगर भयावह (भयानक) परिस्थितियों में गरीबों की मृत्यु हो जाती है तो सारा दोष भाग्य का बताकर सब अपनी ज़िम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेते हैं। यदि समय रहते इनकी सहायता की जाए तो कोई गरीब अकाल मृत्यु न मरे। अत: इस कहानी द्वारा लेखक ने अपने - अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर नैतिकता, परोपकार और सामाजिक ज़िम्मेदारी का संदेश दिया है।

इस कहानी में मुख्य पात्र पहाड़ी बालक है। इसके अतिरिक्त लेखक, लेखक का मित्र एवं वकील

मित्र अन्य पात्र हैं

पात्र परिचय :- इस कहानी के पात्रों का परिचय इस प्रकार है :-

(क) पहाड़ी बालक :- पहाड़ी बालक कहानी का मुख्य पात्र है। उसकी उम्र दस - बारह वर्ष थी। वह नैनीताल के एक गाँव का रहने वाला है। वह गोरा था पर मैल से काला पड़ गया था। आँखें बड़ी और माथे पर अभी से झुरियाँ नज़र आ रही थीं। उसके बड़े बाल थे। वह नंगे पैर, नंगे सिर, एक मैली - सी कमीज़ में खाली पेट ठिठुरता हुआ घूम रहा था। गाँव में गरीबी तथा बेरोज़गार होने के कारण वह गाँव छोड़कर नैनीताल में आ गया था। वह एक होटल में काम करता था, जहाँ उसे एक रुपया और जूठा खाना मिलता था। उसे उस नौकरी से हटा दिया गया था। कहानी के अंत में वह बालक मृत्यु के आवेश में चला जाता था।

(ख) लेखक का मित्र - लेखक का मित्र लेखक के साथ नैनीताल में घूमने आया है। वह गरीब लोगों से सहानुभूति रखता है। वह जिज्ञासु प्रवृत्ति का भी है। गरीब पहाड़ी बालक को देखकर वह उसके बारे में जानकारी प्राप्त करता है। वह उस बालक को अपने वकील मित्र के पास नौकरी के लिए भी लेकर आता है लेकिन खुद न तो उसे खाना खिलाता है, न कपड़े देता है और न ही उसकी आर्थिक सहायता करता है। वह उसे भाग्य भरोसे छोड़ देता है।

(ग) वकील मित्र - वकील मित्र लापरवाह, शक्की तथा निष्ठुर स्वभाव के थे। वे उस गरीब पहाड़ी बालक पर भी शक करते हैं और नौकरी पर नहीं रखते। वे स्वयं तो कश्मीरी दुशाला लपेटे थे। मोजे चढ़े पैरों में चप्पलें थीं; वह भी होटल के भीतर परन्तु उन्होंने उस बालक को ठण्ड से बचने के लिए

कुछ ओढ़ने - पहनने को भी नहीं दिया।

बच्चो! अब पाठ को विस्तार से समझेंगे। कहानी का आरंभ नैनीताल की संध्या से होता है। नैनीताल अपनी प्राकृतिक शोभा के लिए विश्वविख्यात है। लेखक द्वारा कहानी के आरंभ में नैनीताल के सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।

लेखक और उसका मित्र नैनीताल की सैर कर सड़क के किनारे पर एक बेंच पर बैठ जाते हैं। शाम के समय कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो भाप से बादल उनके सिरों को छू-छू कर घूम रहे हों। हल्के प्रकाश व अँधेरे में बादल कभी नीले दिखते, कभी सफ़ेद तो कभी लाल से दिखाई देते। बादलों को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वे उनके साथ खेलना चाह रहे हों।

शाम का समय था। लेखक और उसका मित्र होटल से निकलकर बाहर घूमने आए थे। शाम होने के साथ-साथ ठंड भी बढ़ने लगी। लेखक होटल वापस लौटना चाहते थे लेकिन उनका मित्र कुछ देर वहाँ बैठकर प्रकृति के नज़ारों का आनंद लेना चाहते थे। इसलिए वह लेखक को भी हाथ पकड़कर वहीं बैठा लेते हैं। लेखक चिढ़ रहे थे क्योंकि संध्या हो रही थी। ठंड का मौसम था। वे ठंड से बचने के लिए होटल के लिए लौटना चाहते थे और उनका मित्र चलने का नाम ही नहीं ले रहा था। लेखक ने देखा कि कुहरे की सफ़ेदी में कुछ ही हाथ की दूरी से एक काली सी छाया उनकी ओर आ रही थी। लेखक अब होटल लौटना चाहता था। उसे किसी से दिलचस्पी नहीं थी। इसलिए लेखक ने अरुचि के साथ कह दिया - होगा कोई - लेखक को उससे कोई मतलब नहीं था।

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ - 5 'अपना-अपना भाग्य')

एक लड़का जो काम की तलाश में दर-दर ठोकरें खा रहा था। वह नंगे पैर, नंगे सिर और एक मैली-सी कमीज़ पहने हुए था। उसे कहाँ जाना था और कहाँ उसके पैर पड़ रहे थे। उसे कुछ पता नहीं था। वह करीब दस-बारह साल का लड़का था। गोरा रंग, आँखें बड़ी किंतु सूजी हुई थीं। माथा मानो अभी से झुर्रियाँ खा रहा था। वह अत्यंत ही असहाय था जिसकी सहायता करने वाला इस संसार में कोई नहीं था।

बच्चो! आज हम अपने इस पाठ को यहीं समाप्त करते हैं। सभी छात्र जितना आज पढ़ाया है वहाँ तक पुनः पढ़ेंगे व समझेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

"नैनीताल की संध्या धीरे-धीरे उतर रही थी।"

प्रश्न (क) नैनीताल की संध्या की विशेषताएँ बताइए।

प्रश्न (ख) लेखक अपने मित्र के साथ कहाँ बैठा था? वह वहाँ बैठा-बैठा बोर क्यों हो रहा था और क्यों कुढ़ रहा था?

प्रश्न (ग) लेखक के मित्र को अचानक क्या दिखाई दिया? उसका परिचय दीजिए।

प्रश्न (घ) ज़रा-सी उम्र में उसकी मौत से पहचान हो गई थी। कैसे?

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]